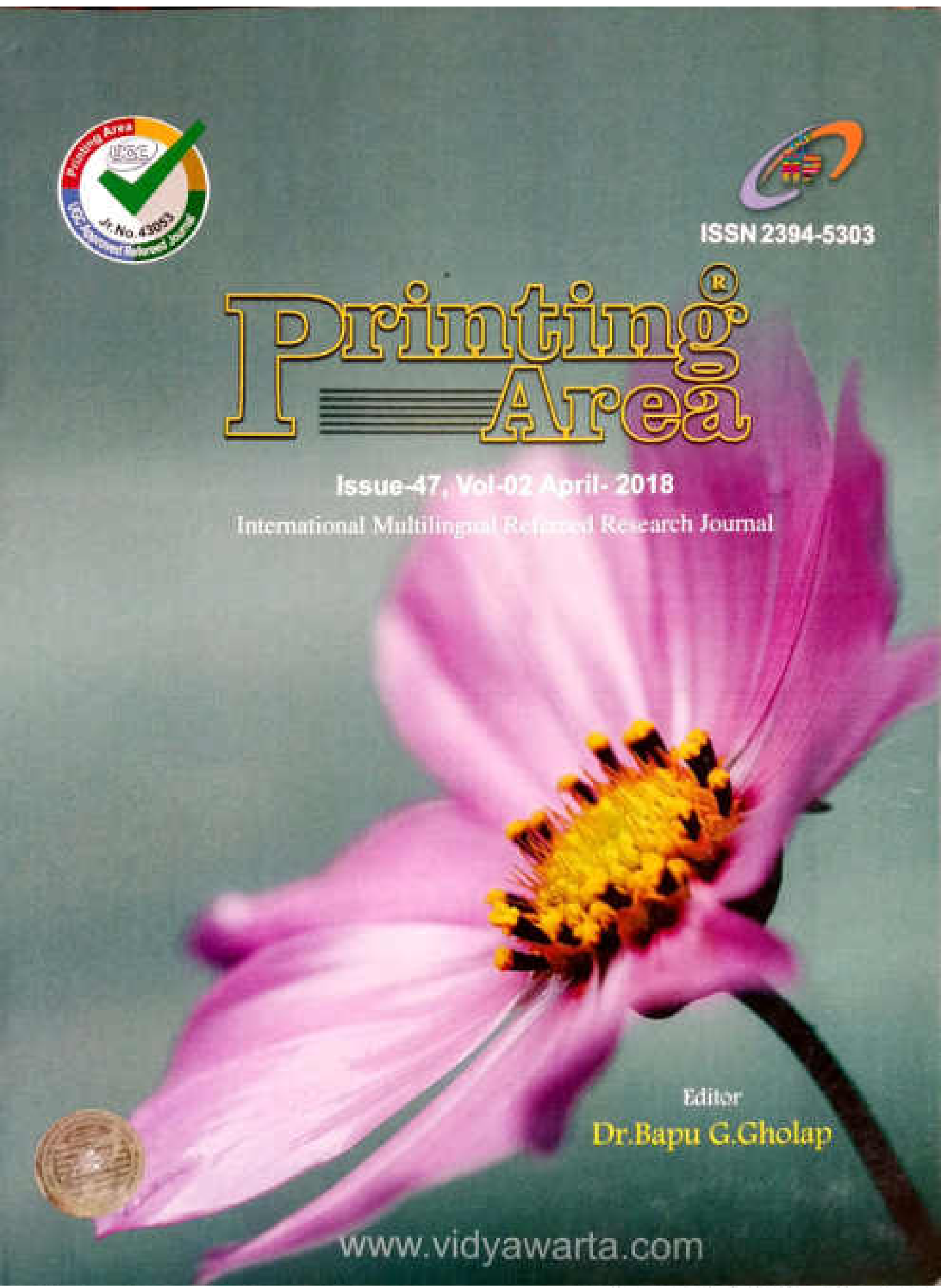

ISSN 2394-5303

Printing Area

Issue-47, Vol-02 April- 2018
International Multilingual Refereed Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

14) राष्ट्रीय एकात्मता वृद्धीसाठी क्रीडा संस्कृतीची भूमिका
प्रा. डॉ. बाबुराव लक्ष्मनराव घायाळे, नांदेड || 55

15) मुस्लिम राजवटीतील शिक्षणाची स्थिती — एक अभ्यास
प्रा.डॉ.चंद्रशेखर क्षिरसागर,नागपूर || 57

16) विनायक तुमराम यांच्या कवितातील अनुभवविश्व
प्रा.रंजना ज्योतीराम महाजन,गोदिंया || 61

17) मुहम्मद तुघलकांची राजधानी परिवर्तनाची योजना: दौलताबाद
डॉ.एच आर चौधरी, पांडे सुनिल संपतराव, धुळे || 64

18) महिलांच्या सक्षमीकरणास स्थानिक स्वराज्य संस्थाची भूमिका
गजानन सुपडाजी विरकर, प्रा. जी. एस. विरकर, अकोट ||67

19) खान्देशातील प्राचीन काळातील महत्त्वाचे मंदिर स्थापत्य:एक अभ्यास
डॉ.डी.डी.राठोड,नंदुरबार || 69

20) सामुद्रिक सुरक्षा के संदर्भ में जल दस्युता : एक चुनौती
रचना इ्योंडी , डॉ. भारती चौहान, श्रीनगर गढ़वाल || 73

21) 'आकाशवाणी' या माध्यमात भाषेचे उपयोजन
प्रा.एकनाथ शामराव पाटील,कोल्हापूर ||79

22) मराठी ललितनिबंधाचे स्वरूप आणि साठोत्तरी मराठी ललितनिबंध
प्रमोद भाऊरावजी लेंडे, नागपूर. || 85

23) वैश्वीकरण के दुष्परिणाम : विशेष संदर्भ धौडड
प्रा.डॉ.कांबळे विलास भागोराव, लातूर || 92

24) सफाई कामगारों की आरोग्य संबंधी समस्याएं और नागपूर महानगर पालिका की नीतीयाँ
रितू एस. खरे, नागपूर || 96

25) केदारनाथ अग्रवाल के उपन्यास ' पतिया' में श्रम सौन्दर्य
संतोष साहेबराव नागरे, जि.बीड || 98

26) उत्तराखण्ड पंचायती राज: प्राकृतिक सम्पदा संरक्षण
डॉ.जगमोहन सिंह नेगी,चमोली। || 100

27) छान्दोग्योपनिषद् का सांस्कृतिक महत्त्व
डॉ.शारदा कुमारी, इलाहाबाद || 106

Scanned with CamScanner

25

केदरनाथ अग्रवाल के उपन्यास ' पतिया' में श्रम सौन्दर्य

संतोष साहेबराव नागरे
सहा.प्रा.हिन्दी विभाग
र.भ.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई, जि.बीड

प्रगतिशील साहित्यधारा में श्रम सौंदर्य की सुदीर्घ परम्परा रही है । श्रम ही वह गुण है जो मनुष्य को जानवरों से पृथक करता है । वानर से नर बनने की विकास यात्रा में मानव के हाथ तथा उसके श्रम का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । वही मानव- विकास यात्रा का बीज माना जाएगा । मानव सभ्यता की विकास यात्रा संबंधी ऐंगल्स के विचारों को आधार बनाकर डॉ. मधुच्छदा कहती हैं, - "जब से वनमानुषों से मनुष्य का विकास हुआ अर्थात चौपायेपन से छूटकर मनुष्य पैरों पर खड़ा हुआ और जब उसका हाथ स्वतंत्र हुआ । यह हाथ श्रम का औजार भी था और श्रम फल भी । मानव के हाथों के द्वारा ही सुन्दर से सुन्दरतम सौंदर्य का सृजन हुआ । हाथों ने मनुष्य को, उसके भाग्य को वास्तव में बनाया । अत: ये हाथ श्रम के प्रतीक बन गए ।"[1] प्रगतिशील साहित्य ने श्रमजीवी वर्ग के श्रम का शोषण करनेवाली साम्राज्यवादी - सामंतवादी - पूँजीवादी व्यवस्था की शोषणनीति को बेनकाब किया । श्रमजीवी वर्ग अपने श्रम द्वारा शोषण मुक्त नवसमाज क निर्माण करना चाहता है, अत: यह प्रगतिशील साहित्य में नायक के रुप में चित्रित हुआ है । प्रगतिशील साहित्य मे श्रम सौंदर्य की परम्परा 'निराला' जी की 'वह तोडती पत्थर' से मानी जा सकती है । जिसका विस्तार केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, त्रिलोचन, मुक्तिबोध आदि प्रगतिशील रचनाकारों की रचनाओं मे पाया जाता है । डॉ. रामविलास शर्मा इस सन्दर्भ में ठीक ही कहते हैं, - "'वह तोडती पत्थर' की परम्परा केदार और नागार्जुन की रचनाओं में विकसित हुई है ।"[2]

केदारनाथ अग्रवाल श्रम सौन्दर्य की परम्परा का सफल निर्वहन करनेवाले अनुपम रचनाकार है । आपकी गद्य और पद्य रचनाओं में श्रम सौन्दर्य बिखरा हुआ है । केदारनाथ अग्रवाल द्वारा लिखित ' पतिया' उपन्यास में श्रम सौंदर्य अपने चरमोत्च रुप में पाया जाता है । उत्तर - प्रदेश के पिछड़े भू-भाग 'कमासिन' और 'पछौहा' गाँव की पृष्ठभूमि पर आधारित पतिया स्त्री प्रधान उपन्यास है । पतिया केदारनाथ अग्रवाल की रचना - श्रमिता तथा श्रमशील भारतीय नारी का प्रतीक है । आनंद प्रकाश के अनुसार -, "'पतिया' का चरित्र किंचित सरल दिखता है लेकिन लेखक उसे एक ऐसे प्रतीक के रुप में पेश करना चाहते है , जिससे मनुष्य मात्र की कर्मठता और गरिमा उजागर हो। उपन्यासकार केदार का सौंदर्य बोध श्रमजीवी वर्ग के साथ जुडा है। अत: श्रमजीवी वर्ग आपकी रचनाओं में हमेशा श्रम करते हुए दिखाई देता है । केदारनाथ अग्रवाल इस संदर्भ में कहते है, "हमको गाँव में वही स्त्री और पुरुष या लडके अच्छे लगते थे जो श्रमजीवी होते थे, काम करते थे, मेहनत करते थे । हमारा सौंदर्य बोध उसके साथ पहले से जुडा हुआ था।"[3] "पतिया कर्मठ स्त्री का प्रतीक है । जिसके माध्यम से उपन्यासकार ने श्रम संस्कृति के महत्व का प्रतिपादन करते हुए निराला जी की 'वह तोडती पत्थर' की परम्परा को विस्तार दिया है । पतिया द्वारा मेले में सूत कातती औरत की मूर्ती खरीदना उसकी श्रमजीवी जनता में आस्था को दर्शाता है । "दस खिलौनों के बीच एक गुजरियों मुँह खोले चरखा कात रही थी । दीन- दुनिया से बेखबर सूत कातने में लगी थी - मानो अपनी तकदीर का तार निकाल रही हो।"[4]

औरत की तकदीर का तार उसके श्रम से ही निकलता है। पतिया की श्रम में दृढ आस्था है, इसीलिए वह अपनी सास, ननद मोहिनी तथा पति की बातों में न आकर अपने आप को उपभोग की वस्तु बनने से बचाती है। पतिया की सास के गाँव के ठाकुर के साथ संबंध है। मोहिनी भी माँ के ही कदमों पर पाँव रखती हुई आगे बढती है। अपनी सौन्दर्य की मोहिनी जाल में वह गाँव के ठाकुर को फँसाती है और अंत तक उपभोग की वस्तु बनकर रह जाती है। पतिया का पति स्वामिदीन शहर जाकर दीन दु:खी लडकियों को देहव्यापर की दलदल में फँसाने की दलाली करता है। ऐसी विषम स्थितियों में पतिया हाड़-तोड़ मेहनत करती हुई घर को मिट्टी में मिलाने से बचाती है। पतिया के लिए श्रम ही धर्म है। पतिया के श्रम से ही घर सूरज की सुनहरी किरणों की भाँती जगमगा उठता है। पतिया के श्रम से घर की बदली हुई स्थितियों को रेखांकित करते हुए केदारनाथ अग्रवाल कहते है,- " पतिया दो घरों में पानी भरने का काम करने लगी। एक घर में चौका बासन की नौकरी मिल गयी। इस तरह कुल तीन जगह, उसे काम करना पडता था। इसके अलावा अपने घर का पूरा काम भी वही करती थी। ... पतिया की मेहनत से घर फिर सुधर चला। साफ-सुथरा रहने लगा। सवेरे पतिया सबसे पहले उठ कर घर में झ

झाड़ू लगाती। रस्सी कंधे पर डाल और घड़ा बगल में दबा कुएँ से पानी भर लाती। बरतन वगैरह माँजती। बकरियों की देखभाल करती। उनकी मींगनियों के ढेर को डलिया में भर कर फेंक आती। चूल्हे को ठीक करती। गुर्सी में आग जलाती । यही सब करते - करते सूरज की किरणें खपरैल पर फैल जाती और घर में उजाला भर आता।"[६]

पतिया मोहिनी की तुलना में दिखने में साधारण होने पर भी अपने श्रम एवं संघर्ष की बदौलत अत्याधिक सुन्दर दिखाई देती है। केदारनाथ अग्रवाल इस सन्दर्भ में ठीक ही कहते है,- " उस स्त्री का सौन्दर्य मुझे आकर्षित नहीं करता था, जो पतली - दुबली हो, सजी-सजायी हो। उस स्त्री का सौन्दर्य मुझे आकर्षित करता था जो खूब काम करती हो और बड़े - बड़े हंडे पानी के लेकर चलती हो। गाँव में हमारे यहाँ पीतल के बड़े- बड़े हंडे थे, दो - सिर पर लिए और एक हाथ में लटकाए एक इयर ...उसको मैं कभी नही भूलता।"[७] यहाँ केदारनाथ अग्रवाल जी की श्रम संबंधी विचारधारा का पतिया सफल निर्वहन करती हुई दिखाई देती है। पतिया की श्रम के प्रति दृढ आस्था से प्रभावित होकर मोहिनी कहती है-" और तुम और तुम्हारे हाथ क्या कम मजबूत है? कितना काम करती हो इन हाथों से। चाहो तो दुनिया को उलट - पलट डालो।"८ श्रमजीवी वर्ग के छोटे हाथो में ही दुनिया को बदलने की क्षमता है। अतः केदारनाथ अग्रवाल ने श्रमजीवी वर्ग के छोटे हाथो को कमल की उपमा दी है। रामविलास शर्मा इस सन्दर्भ में ठीक ही कहते है, - " केदार के लिए ये कमल जैसे है, लाल कमल जैसे, जो सबेरा होते ही काम में लग जाते है। हाथ का काम में लगना कमल का खिलना है।"[९] केदारनाथ अग्रवाल अपनी 'छोटे हाथ' शीर्षक कविता में छोटे हाथों की कमाल की क्षमता के संदर्भ में ठीक ही कहते है,-

" छोटे हाथ / सबेरा होते / लाल कमल से खिल उठते है।

करनी करने को उत्सुक हो / धूप हवा में हिल उठते है।।"[१०]

श्रम तथा श्रमजीवी जनता के प्रति केदारनाथ अग्रवाल की दृढ आस्था उनकी हर रचना में देखने को मिलती है। डॉ. मधुच्छदा इस सन्दर्भ में कहती है -, " केदारनाथ अग्रवाल की प्रगतिशीलता का मुख्य आधार श्रमजीवी जनता में आस्था है। श्रमजीवी जनता के प्रति उनकी इस आस्था में दृढता झलकती है।"११ श्रम की प्रतिष्ठापना करते हुए शोषण मुक्त, स्वस्थ, सुंदर एवं खुशहाल समाज का निर्माण रचनाकार केदारनाथ अग्रवाल का उद्देश रहा है। केदारनाथ अग्रवाल इस सन्दर्भ में कहते है- " मैं साहित्य की रचना केवल इस उद्देश्य से ही करता हूं कि अपने देश के निवासियो को एक स्वस्थ दृष्टिकोण दे सकूँ, जिसके द्वारा वह सभ्य और कर्मठ बनकर देश का निर्माण कर सके। यह आदर्श है मेरा।..... हवाई आदर्श की ओर मेरी आँख न उठी है, न उठेगी और न मैंने अपने देशवासियों को काल्पनिक हवा महल में बंद करने की ठानी है। मेरा आदर्श धरती से उत्पन्न हुआ, धरती के लोगों के जीवन का आदर्श है जो सौ फीसदी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक भी है।१२ केदारनाथ अग्रवाल के रचनात्मक उद्देश्य की मर्मस्पर्शी तथा कलात्मक अभिव्यक्ति ' पतिया' को एक महत्वपूर्ण उपन्यास के रुप में स्थापित करती है।

सारांश :

केदारनाथ अग्रवाल द्वारा लिखित 'पतिया' श्रम संस्कृति का संवहन करने वाला एक महत्वपूर्ण स्त्री प्रधान उपन्यास है। पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था ने सदियों से स्त्री श्रम को हाशिए पर रखते हुऐ उसकी अपेक्षा की। केदारनाथ अग्रवाल ने सदियों की इस परम्परा को 'पतिया' उपन्यास के माध्यम से खंडीत करते हुए दुनिया के नवनिर्माण में स्त्रियों के श्रम की अहम भूमिका को अधोरेखित किया।

संदर्भ ग्रंथ :-

१. मधुच्छदा, श्रम का सौन्दर्यशास्त्र और केदारनाथ अग्रवाल का काव्य, पृ. १५३

२. संपा. डॉ. रामविलास शर्मा, श्रम का सूरज (केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ), पृ. २४

३. संपा. संतोष भदौरिया, केदारनाथ अग्रवाल: गद्य की पगडंडियाँ, पृ.१५

४. संपा. अजय तिवारी, इब्बार रब्बी, कवि मित्रों से दूर, पृ. ७५

५. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया, पृ. ३८

६. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया, पृ. ८१

७. संपा. अजय तिवारी, इब्बार रब्बी, कवि मित्रों से दूर, पृ. ४२

८. केदारनाथ अग्रवाल, पतिया, पृ.१३०

९. संपा. डॉ. रामविलास शर्मा, श्रम का सूरज (केदारनाथ अग्रवाल की कविताएँ), पृ. २५

१०. केदारनाथ अग्रवाल, गुलमेंहदी, पृ. १३४

११. मधुच्छदा, श्रम का सौन्दर्यशास्त्र और केदारनाथ अग्रवाल का काव्य, पृ. १४८

१२. संपा. नरेंद्र पुण्डरीक, केदार शेष - अशेष, पृ. १६९

❒ ❒ ❒

Scanned with CamScanner